शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

छत्तीसगढ़ बस्तर संभाग की सांस्कृतिक परम्परा हाट–बाजारों में मुर्गा लड़ाई

प्राप्तिः 13.08.2024
स्वीकृतः 15.09.2024

65

हरीश कुमार चन्द्राकर
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग, जिला–दुर्ग(छ.ग)
ईमेलः *infoharish555@gmail.com*

डॉ. सुचित्रा शर्मा
वजिटिंग प्रोफेसर,
भारती विश्वविद्यालय,
जिला–दुर्ग(छ.ग)

डॉ अमरनाथ शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
शासकीय नवीन महाविद्यालय,
बोरी, जिला–दुर्ग(छ.ग.)

सारांश

छत्तीसगढ़ राज्य जनजाति बहुल्य क्षेत्र है और बस्तर संभाग में गोंड जनजाति प्रमुख जनजाति है। यहां गोंड जनजाति की उपशाखा मुरिया एवं माड़िया निवासरत है। यहां की संस्कृति विश्व विख्यात है जो आज भी देखने को मिलता है। यहां के गोंड जनजाति प्राकृतिक जीवन–यापन करते है जिसमें पहाड़, जंगल, पशु–पक्षियों, एवं टोटम के माध्यम से पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तु का संरक्षण करते हैं, बस्तर में मनोरंजन की ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्परा जो ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी वैसे ही विद्यमान है और उसका रूप दिखाई देता हैं यहां के हाट बाजारों में। हाट–बाजार की शान कहे जाने वाले गतिविधियों में मुर्गा–लड़ाई मनोरंजन का प्रमुख साधन है। मनोरंजन के साथ यह सामुदायिक उत्सव भी है। इस अध्ययन में ये देखने का प्रयास किया गया है कि जनजाति क्षेत्रों में मुर्गा लड़ाई के ऐतिहासिक दृश्टिकोण, बस्तर के ग्रामीण अंचलों में मुर्गी पालन एवं देखभाल, लड़ाकू मुर्गे की प्रजाति, मुर्गा लड़ाई के लिए मुर्गे को प्रषिक्षित करना आदि शामिल है साथ ही मुर्गा लड़ाई से संबंधित आयोजन, संचालन, तैयारी, नियमों ये सारे गतिविधियों के लिए आयोजित करने के परिप्रेक्ष्य के संबंध में इस अध्ययन के अन्तर्गत वैज्ञानिक दृश्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया।

छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित बस्तर संभाग, प्राकृतिक मनमोहक सादृश्य से सुसज्जित वातावरण जिसमें प्राकृतिक झरने जैसे चित्रकोट, तीरथगढ़, हान्दावाड़ा इत्यादि है इनके साथ–साथ पहाड़ो, जंगलों, घाटी जिसमें बस्तर के प्रवेषद्वार कहे जाने वाले केशकाल घाटी आदि शामिल है। बस्तर संभाग जिसमें आदिम संस्कृति एवं परम्पराओं को इन खूबसूरत वादियों के साथ संजोकर रखने वाले गोंड जनजाति निवासरत हैं। बस्तर की गोंड जनजाति की संस्कृति एवं परम्पराएं विश्व विख्यात हैं। इस जनजाति की उपशाखाएं मुरिया, मारिया, भतरा एवं दोरला प्रमुख जनजाति है। भूमि, नदियाँ, जंगल, पहाड़ों के साथ प्राकृतिक जीवन–शैली में यहां के जनजातियों को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आज बदलते आधुनिक तकनीकी ज्ञान के साथ अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं को बचाए रखना एवं अगली पीढ़ियों को हस्तान्तरित करना वर्तमान में सभी समाजों के लिए चुनौती हैं परन्तु बस्तर में निवासरत गोंड जनजाति आधुनिकता को अपनाने के साथ–साथ अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं को भी बनाए रखना चाहते है, युवा वर्ग भी अपनी इस संस्कृति के प्रति सजग है परिणाम स्वरूप धार्मिक आयोजनों, सामाजिक कार्यो, नृत्य–संगीत एवं पर्यावरण के साथ जीने में सहज ही महसूस करते हैं।

बस्तर के ग्रामीण अंचलों में लगने वाला साप्ताहिक हाट–बाजार भी बहुत प्रसिद्ध है, जो सप्ताह के किसी एक या दो दिन निर्धारित होता है, इस बाजार में स्थानीय साग–सब्जी, जंगलों से प्राप्त सामग्री का क्रय–विक्रय एवं महुआ, सल्फी, से बना मादक द्रव्य जिसे महिला–पुरूष साथ मिलकर पीते है तथा अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति इस हाट–बाजारों के माध्यम से हो जाती है। बस्तर के हाट–बाजारों में सिर्फ समानों की लेन–देन नहीं होता, अपितु यहां के लोगों की भावनाएं इनके साथ जुड़े हुए होते है मानो कोई उत्सव मना रहें हों, ये सब एक अलग ही मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। जिस गांव में हाट–बाजार होता है उस क्षेत्र के आस–पास में रहने वाले ग्रामीण एकत्रित होते हैं। गांव के परिवार के सभी सदस्य, आस–पास गांव में रहने वाले सगे–संबधियों, मित्रगण, युवक–युवती, बच्चे, बुजुर्ग ये सभी उत्साह के साथ बाजार आते है जिसमें से कुछ लोग अपने साथ लेकर आए सामान को बेचकर अपनी आवश्यक वस्तुएं, साग–सब्जी खरीदते हैं तो कुछ लोग सिर्फ खरीदारी करने आते है, कुछ लोग महुआ, सल्फी एवं अन्य मदिरापान पीने में मस्त रहते हैं। इन सभी को देखकर ऐसा लगता है मानों इनके जीवन में कोई दुख, गम ही ना हो, यहां की हाट–बाजार सामुदायिक जीवन का एक अहम हिस्सा है।

बस्तर के ग्रामीण अंचल में हाट–बाजारों में एकत्रित हुए ग्रामीण, अन्य गांव के लोग, सगे–संबंधियों, क्रय–विक्रय करने आये लोगों के लिए मनोरंजन की जो व्यवस्था है, वे प्राचीन परम्पराओं के रूप में आज भी दिखाई देती है, इन प्राचीन परम्पराओं में एक बहुत प्रमुख गतिविधि है 'मुर्गा–लड़ाई'। बस्तर की मुर्गा–लड़ाई विश्व–प्रसिद्ध हैं। मुर्गा लड़ाई का आयोजन हाट–बाजारों के अलावा गांव के किसी उत्सव, मड़ई–मेला, त्यौहार, में भी किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1. बस्तर के गोंड जनजाति क्षेत्र के हाट–बाजारों में होने वाले मुर्गा लड़ाई का अध्ययन करना।
2. मुर्गा लड़ाई की ऐतिहासिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. मुर्गा लड़ाई के विभिन्न नियमों का अध्ययन करना।

4. मुर्गा लड़ाई के दौरान की गतिविधियों का अध्ययन करना।

5. मुर्गा लड़ाई की वर्तमान स्वरूप एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

अध्ययन हेतु परिकल्पना

1. यहां की जनजाति इस मुर्गा–लड़ाई के माध्यम से अपनी आजिविका को जोड़तें हैं क्योंकि यह इनकी सांस्कृतिक परम्परा हैं।

2. मुर्गा लड़ाई सामुदायिक भावना को उजागर करती है।

3. मुर्गा लड़ाई आज वर्तमान में मनोरंजन का माध्यम बनकर व्यवसायिक स्वरूप में परिवर्तित होने लगी हैं।

अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण एवं शोध पद्धति

छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग में निवासरत गोंड जनजाति के प्रमुख सांस्कृतिक परम्परा एवं मनोरंजन के लिए किए जाने वाले मुर्गा लड़ाई का का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए निर्देशन के रूप में बस्तर संभाग के कोण्डागांव जिले का पाँच गांव के हाट–बाजारों में आयोजित होने वाले मुर्गा लड़ाई का चयन किया गया है जो निम्नानुसार है–

क्रमांक	ग्राम का नाम	हाट–बाजार का दिन
1.	बम्हनी	रविवार
2.	सम्बलपुर	मंगलवार एवं शनिवार
3.	दहीकोंगा	शुक्रवार
4.	बाखरा	सोमवार
5.	बनियागांव	गुरूवार

मुर्गा–लड़ाई जो हैं ये हाट–बाजारों में आयोजित की जाती है और इनके लिए दिन–निर्धारित होती है। ये देखते हुए कि किस दिन में किस का गांव में हैं, इनके आधार पर पांच गांव का चयन किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार विधि एवं सामूहिक चर्चा का प्रयोग किया गया है एवं साथ में द्वितीयक स्रोत के लिए पुस्तकें, सामाचार पत्र, युट्यूब के विडियों आदि का प्रयोग किया गया है।

मुर्गा लड़ाई के ऐतिहासिक दृष्टिकोण

बस्तर के गोंड जनजाति अपने जिन्दगी के हर दिन को उत्साहित होकर जीवन व्यतित करते है। ये लोग अपने जीवन का अधिकतम समय अपने आजीविका के साधन को एकत्रित करने के साथ नृत्य–संगीत, मनोरंजन, सामूहिक जीवन एवं प्राकृतिक वातावरण में व्यतित करते है। ग्रामीण अंचल के सभी घरों में पालतू पशु और पक्षियों के रूप में गाय, बैल, भैंस, बकरी, खरगोश, तोता, मैना, तथा मुर्गा का पालन करते हैं। विशेष रूप से मुर्गा पालन विभिन्न उत्सव, संस्कारों, धार्मिक कार्यों,

जादू–टोने और अतिथि सत्कार के लिए भोजन के रूप में तथा सबसे महत्वपूर्ण मुर्गा–लड़ाई के लिए किया जाता है।

केस क्रमांक 1 ने बताया कि बस्तर में प्राचीन समय से बाजारों एवं प्रमुख उत्सव मड़ई–मेला में मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में मुर्गा लड़ाई को अपनाया गया है। बस्तर के हाट बाजार भी यहाँ की संस्कृति का अहम हिस्सा है। बाजार में केवल उपयोगी सामानों का लेन–देन ही नहीं होता, अपितु बाजारों में अपने सगे संबंधियों, मित्रों के प्रति मिलन के भावनाएं भी व्यक्त करने का माध्यम भी है और इन्ही सगे–संबंधियों के मिलन के मनोरंजन के लिए मुर्गा लड़ाई का आयोजन किया जाता है। मुर्गा लड़ाई हमेशा दो मुर्गों के मध्य होती है, जिसमें से जो मुर्गा हार जाता हैं वह विजेता मुर्गे के मालिक का हो जाता हैं, जिसे भोजन के रूप में शाम को बाजार देखने आए मेहमान, मित्र एवं परिवार के लिए बना कर खाया जाता हैं।

बस्तर के ग्रामीण अंचलों में मुर्गी पालन एवं देखभाल

केस क्रमांक 02 ने बताया कि बस्तर में ग्रामीण अंचल के लगभग सभी के घरों में मुर्गी पालन होता है जो यहां आम बात है। मुर्गी पालन के लिए उचित वातावरण है जिसके कारण मुर्गियों को बहुत कम बीमारी होती है। अपने घरों में मुर्गियों के लिए अलग से छोटे–छोटे आवास की व्यवस्था भी करते हैं, जहां पर मुर्गियां अण्डा भी देती हैं, एवं उनके छोटे चिंया/कुकड़ी पीला (चुजों) की सुरक्षा भी होती हैं। मुर्गियों के लिए अलग से दाना–पानी की व्यवस्था नहीं होती बल्कि घर के आस–पास एवं बाड़ी में कीड़े–मकोड़े को खाकर वे अपना स्वयं पेट भरती हैं और घर का बचा हुआ भोजन भी उन्हे दिया जाता है। ये बाहर घुमने भी जाते हैं चरने के लिए, जो षाम होते स्वयं ही अपने स्थान में वापस आ जाते हैं ये इनके दिनचर्या होते हैं। ग्रामीणों को सुबह जगाने (बासने) का काम भी मुर्गे ही का होता है जो सुबह लगभग चार बजे से आवाज देना शुरू कर देता है। मुर्गे की आवाज ही अलार्म का काम करते हैं जो सुबह होने का संकेत देता है। ग्रामीणजन मुर्गा पालन कर मुर्गी के अण्डे, मुर्गा–मुर्गी, एवं छोटे–छोटे बच्चे चिंया/कुकड़ी पीला (चुजा) को बेचकर आर्थिक उपार्जन करते है। इन मुर्गियों के अण्डे पोष्टिक एवं स्वादिष्ट होने के कारण बायलर मुर्गी के अण्डे की तुलना में अधिक मूल्य में बिक्री होता है।

लड़ाकू मुर्गा की प्रजाति

केस क्रमांक 03 ने बताया कि बस्तर के ग्रामीण अंचलों में निवासरत गोंड जनजाति के घरों में मुर्गियों का पालन करना आम बात है। मुर्गा लड़ाई जो बाजार की शान कहा जाता है जिसके बिना बस्तर में ग्रामीण हाट–बाजारों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस बाजार की शान मुर्गा लड़ाई के लिए भी खास प्रजाति के मुर्गा 'असील' का चयन बस्तर वासियों द्वारा किया जाता है। असील प्रजाति के मुर्गे का वैज्ञानिक नाम 'गेलस डामेस्टिक्स' है। असील मुर्गे की शारीरिक बनावट ही इस प्रजाति को मुर्गा लड़ाई के लिए सबसे अधिक उपयुक्त मानी जाती है इसलिए इस प्रजाति को मुर्गा की 'लड़ाकू' प्रजाति भी कहा जाता है। मुर्गा की असील प्रजाति के अन्तर्गत रेजा, टीकर, चिन्ताद, कागर, नूरिया 89, यारकी और पीला नस्ल बहुत प्रसिद्ध है। यहॉ प्राचीन समय से ही मुर्गा लड़ाई के लिए असील प्रजाति मुर्गा का ही उपयोग किया जाता रहा हैं। इसकी शारीरिक बनावट में

गर्दन लम्बी व बेलनाकार होती है, पैर लम्बा और मजबूत होते हैं, इनके पंख लम्बा और फैलावदार होते हैं। तेज नजरे व स्फूर्ति, स्वभाव आक्रमक एवं गुस्सैल होती हैं। युवा मुर्गा का वजन 4 से 6 कि. ग्रा. तथा इस प्रजाति की युवा मुर्गी का वजन 3.50 कि.ग्रा. से 4.50 कि.ग्रा. तक हो जाता है।

लड़ाई के लिए मुर्गा को प्रशिक्षित करना

लड़ाकू मुर्गे की देखभाल उसके मालिक के द्वारा अपने बच्चे की तरह ही बहुत प्यार से की जाती हैं। अच्छे से देखरेख करने का एक कारण यह भी है कि मुर्गा लड़ाई में मुर्गा की हार–जीत में उनके मालिक की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगे होते हैं। मुर्गे के मालिक उसे प्रशिक्षित करने के साथ–साथ उनके रहन–सहन एवं खान–पान पर भी विशेष ध्यान देते हैं। मुर्गा के मालिक मुर्गा की स्फूर्ति, तेजी से वार करने की क्षमता, शक्ति को बढ़ाने के लिए सामान्य खान–पान के साथ जड़ी–बूटियां भी खिलाते हैं।

केस क्रमांक 04 ने बताया कि वह अपने मुर्गे को लड़ाई से कुछ दिन पहले मुर्गियों से दूर रखते हैं ताकि वह संभोग ना कर सके इसके कारण मुर्गे गुस्सैल व आक्रमक हो जाते हैं। बाजार में होने वाले मुर्गा लड़ाई से पहले मुर्गा को अपने घर में ही अन्य मुर्गो के साथ लड़ाई कराते हैं इस लड़ाई में जो मुर्गा अधिक बार विजेता होते है उसी मुर्गे का चयन किया जाता हैं, चयनित मुर्गे को सीधे मैदान में नहीं उतारते, अपितु उस मुर्गे को पहले दो–तीन बाजार में मुर्गा लड़ाई दिखाने के लिए ले जाते हैं, इसका कारण यह है कि मुर्गा दर्शकों या भीड़ को देखकर भयभीत ना हो। इस तरह से मुर्गे को लड़ाई के लिए तैयार एवं प्रशिक्षित किया जाता है।

मुर्गा लड़ाई के लिए दिन एवं समय का निर्धारण

ग्राम बम्हनी के हाट बाजार में मुर्गा लड़ाई कराने वाली आयोजित समिति के सदस्यों के साथ सामूहिक चर्चा के दौरान बताया कि वैसे तो मुर्गा लड़ाई का आयोजन कभी भी किया जा सकता है और कोई भी दिन एवं समय में हो सकता है परन्तु बस्तर के ग्रामीण–जन अपने–अपने आजिविका के साधन एवं अन्य कार्यों में जुटे रहते हैं। मुर्गा लड़ाई उनके मनोरंजन का प्रमुख साधन है, तो इसके लिए खास मौके का चयन किया जाता है। जहां पर ग्रामीण एवं आस–पास के लोग एकत्रित हो और भीड़ भी हो ताकि पर्याप्त दर्शक हो और अधिक से अधिक लोग आन्नद उठा सकें। ऐसा मौका तब होता है जब गांव में साप्ताहिक हॉट–बाजार हो या गांव में त्यौहार, धार्मिक कार्य, मड़ई–मेला इत्यादि आयोजित हो। मुर्गा लड़ाई के लिए सबसे ज्यादा अवसर साप्ताहिक बाजार का दिन होता हैं क्योंकि ये हर साप्ताह होता है और जिस दिन किसी का गांव का बाजार का दिन निर्धारित होता है उस दिन उस गांव के आस–पास 10–15 गांव में बाजार नहीं लगता। इससे बाजार में भीड़ भी बहुत रहती हैं इसी भीड़ को ध्यान में रखते हुए मुर्गा लड़ाई का आयोजन किया जाता है। इससे मुर्गा लड़ाई के लिए बहुत सारे दर्शक भी मिल जाते है और ग्रामीणों का मनोरंजन भी होता है। बाजार या अन्य अवसरों में होने वाले मुर्गा लड़ाई के लिए समय दोपहर 11–12 बजे से शाम सूर्य ढलते तक किया जाता है, वैसे तो बाजार सुबह से शाम तक रहता है, परन्तु ग्रामीण–जन एवं अन्य गांव के लोग दोपहर 11–12 बजे से बाजार पहुंचते है और शाम को सभी अपने–अपने घर लौट आते हैं।

बाजार में मुर्गा लड़ाई के लिए निश्चित स्थान का चयन

इस समिति के साथ सामूहिक चर्चा के दौरान आगे बताया कि गांव के किसी एक दिशा में बड़े से स्थान को बाजार के लिए निर्धारित होता है, इस बाजार में सभी सामानों का क्रय–विक्रय के लिए निर्धारित स्थान होता है, जिसमें साग–सब्जी, मांस–मछली, कपड़े, बच्चों के लिए खिलौना व घर के उपयोगी समान, महुआ, ईमली, धान–चांवल व अन्य सामानों के लिए, और महुआ मंद, सल्फी अन्य मादक पेय के लिए स्थान निर्धारित किया जाता है। इस बाजार में किसी एक कोने के स्थान में बड़े से जगह में मुर्गा लड़ाई का आयोजन किया जाता है। इस स्थान को लकड़ी के खम्बे के माध्यम से गोलाकार स्वरूप में घेर लिया जाता है जिसके अन्दर मुर्गा लड़ाई होती है तथा बाहर दर्शक के लिए निर्धारित किया जाता है। किसी–किसी गांव के बाजारों में आयोजकों द्वारा दर्शकों से षुल्क भी लिया जाता है। ऐसे स्थान में दो गोलाकार घेरा लकड़ियों के खम्बे से किया जाता है प्रथम घेरा तो मुर्गा लड़ाई के लिए होती है परन्तु दूसरे घेरा के अन्दर दर्शक होते है। जो इस घेरे के बाहर होते हैं वे शुल्क नही देने के कारण मुर्गा लड़ाई को नहीं देख पाते।

हाट–बाजारों में होने वाले वाले मुर्गा लड़ाई की संख्या

ग्रामीण अंचल में हाट बाजार सप्ताह के किसी एक दिन निर्धारित होता है। मुर्गा लड़ाई के लिए समय दोपहर से 11 बजे से षाम सूर्य ढलने तक निर्धारित रहता है। एक बार के खेल में दो मुर्गे के मध्य लड़ाई करायी जाती है जिसकी कोई समय सीमा निर्धारित नहीं होती परन्तु यह लड़ाई किसी एक मुर्गे के हार जाने के बाद समाप्त होती है। मुर्गा लड़ाई शाम होते तक 10 बार से 30 बार तक होती है। मुर्गा लड़ाई की कोई संख्या निर्धारित नहीं किया गया है परन्तु कम–ज्यादा का निर्धारण मौसम के आधार पर भी तय होता है। जैसे बरसात के मौसम में हाट–बाजारों में बारिश और कृषि कार्यों में व्यस्तता के कारण भीड़ कम होती है जिसके कारण मुर्गा लड़ाई की संख्या कम हो जाती है जो 10 से 12 बार तक ही शाम तक हो पाती है। ठंड के मौसम में यह संख्या सामान्य रहती है जो 15 से 20 बार तक होती है। गर्मी के दिनों के सभी हाट बाजारों में सबसे अधिक संख्या में मुर्गा लड़ाई होती है। जिसमें 20 बार से भी अधिक मुर्गा लड़ाई हो जाती है इसका कारण यह है कि गर्मी के दिनों में हाट बाजार में भीड़ अधिक होती है। इस तरह से मौसम के अनुसार मुर्गे लड़ाई का आयोजन कम या ज्यादा बार किया जाता है। मड़ई–मेला में होने वाले मुर्गा लड़ाई की संख्या 50 से अधिक भी हो जाती है।

मुर्गा लड़ाई का आयोजन करने समिति का गठन

बस्तर में किसी गांव के बाजार में आयोजित मुर्गा लड़ाई के लिए ग्राम सभा द्वारा एक समिति का गठन किया जाता है, जिसके सदस्य मुर्गा लड़ाई की सम्पूर्ण व्यवस्था को संचालित करते हैं। इस समिति का कार्य मुर्गा लड़ाई के लिए स्थान एवं समय का निर्धारण करना दर्शकों के लिए शुल्क का निर्धारण भी करना है, जो 30 रूपये से 150 रूपये तक का शुल्क तय की जाती है। यह शुल्क सभी जगह अलग–अलग होता है एवं समिति द्वारा निर्धारित किया जाता है। बहुत से गांव में समिति के द्वारा दर्शकों के लिए निशुल्क व्यवस्था भी होती है। मुर्गा लड़ाई के लिए नियम बनाना, विवाद के स्थिति में निर्णय लेना, इत्यादि कार्य के लिए निर्धारित समिति ही निर्णय लेती है।

मैदान के बाहर दो मुर्गो के मध्य अभ्यास के माध्यम से प्रतिद्वंदी मुर्गा का चयन करना

मुर्गा लड़ाई हमेशा दो समान मुर्गों के मध्य करायी जाती है। मुर्गा लड़ाई के लिए उस स्थान पर बहुत सारे लोग अपने साथ मुर्गा लेकर आते है। इन्ही में से बहुत से समानता वाले मुर्गो के साथ अभ्यास कर लड़ाई के लिए चयन किया जाता है। इसमें दोनों मुर्गा के उंचाई, वजन इत्यादि समानता के आधार पर मुर्गा के प्रतिद्वंदी मुर्गा का चयन होता है और ऐसे ही समानता वाले बहुत से मुर्गे के मध्य एक–एक कर कुछ समय के लिए मैदान के बाहर लड़ाई करायी जाती है। तब मुर्गा लड़ाई के लिए दो प्रतिद्वंदी मुर्गा का चयन किया जाता हैं।

मुर्गा के पैर में छुरा(चाकू) बांधना

मुर्गा लड़ाई से पहले मुर्गा के लिए जोड़ी चयन कर लेने के पश्चात दोनों मुर्गा के दाएं पैर में छोटा तलवार/चाकू/छुरा बांध दिया जाता है। इसे स्थानीय भाषा में काती कहते हैं और काती बांधने वाले को कातकार/कातेयार कहा जाता है। मुर्गा के आकार के आधार पर काती भी अलग–अलग स्वरूप में बाजार में उपलब्ध होता है। काती को मुर्गा के पैर में अच्छे से बांधते है तथा मुर्गा लड़ाई के दौरान मुर्गा एक दूसरे पर इसी काती से हमला कर जख्मी करते हैं। यह मुर्गा लडाई का प्रमुख हथियार है।

मुर्गा लड़ाई के दौरान होने वाली गतिविधियां

मुर्गा लड़ाई होने के दौरान दो प्रकार से लड़ाई करायी जाती है– प्रथम नियम के अन्तर्गत मुर्गा को मैदान में दोनों मुर्गा के कातकार अपने–अपने हाथ में पकड़ कर लड़ाते है। द्वितीय नियम के अन्तर्गत मुर्गा के मालिक के अनुसार दोनो मुर्गा को मैदान में पुरी तरह से स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। इस नियम को स्थानीय भाषा में छोड़ा–छोड़ी/चांडा–चांडी कहा जाता है। इस नियम के अनुसार दोनों मुर्गा में से किसी एक का मृत्यु हो जाने तक कातकार दोनों मुर्गा को हाथ नहीं लगाते। जिस भी मुर्गा का मृत्यु हो जाता है उसे हारा हुआ घोषित कर दिया जाता है।

मुर्गा लड़ाई के दौरान दोनों मुर्गा को बीच–बीच में कुछ मात्रा में पानी पिलाना साथ में मुर्गे के चोंच को पकड़कर कातकार अपने मुंह से फूंक लगाते हैं जिससे मुर्गा में स्फूर्ति आ जाये और मुर्गा मैदान छोड़कर ना भागे।

दोनो मुर्गा के हार–जीत पर दांव

मुर्गा लड़ाई के मैदान में उतरने से पूर्व दोनों मुर्गा के मालिक दांव लगाते है अपने–अपने मुर्गा पर। इसमें दानो पक्ष दांव के लिए रकम तय करते हैं। यह हजारों से लेकर लाखों तक हो सकता है।

दर्शकों में भी एक–दूसरे के मध्य मैदान के बाहर दोनो मुर्गा में दांव लगाते हैं कोई हार में दांव खेलता है तो कोई जीत में। जैसे कि एक दर्शक हारने वाले मुर्गा पर 500 रूपये का दांव किसी अन्य दर्शक के साथ लगाएगा तो उस दर्शक को जीतने वाले मुर्गा पर दांव लगाने पर 700 रूपये का दांव लगाना पड़ेगा। यह दांव अलग–अलग भी हो सकता है। दर्शकों के मध्य भी दांव हजारों–लाखों रूपये तक चलता है। मुर्गा लड़ाई के दौरान दांव लगाने वाले मुर्गा की ऊंचाई, वजन, लड़ने का तरीका, मर्गा की स्फूर्ति इत्यादि देखकर दांव लगाते हैं।

मुर्गा लड़ाई में हार जीत का निर्णय का आधार

मुर्गा लड़ाई में सभी नियम पहले से बना दिए जाते हैं जिसमें से कुछ नियम मुर्गा की हार–जीत के लिए तय कर लिए जाते हैं। इस हार–जीत की घोषणा मैदान के अन्दर समिति के एक सदस्य जो निर्णायक की भूमिका में होते हैं, उनके द्वारा घोषित किया जाता है तथा निम्न नियम के द्वारा हार और जीत का फैसला सुनाते हैंः–

1. मुर्गा लड़ाई के दौरान दोनों मुर्गा में से कोई भी मुर्गा मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं तो उस मुर्गे को हारा हुआ मानते है।
2. दोनों में से कोई भी मुर्गा घायल होकर लड़ने में असमर्थ हो तो उसे हारा हुआ मानते हैं।
3. मुर्गा लड़ाई के दौरान मुर्गा के मृत्यु होने पर प्रतिद्वन्दी मुर्गा को विजेता घोषित कर दिया जाता है।
4. हार–जीत का कुछ नियम स्थानीय गांव के हाट–बाजार के आधार पर निर्धारित किया जाता है जो अन्य से भिन्न होता है।

मुर्गा लड़ाई में हार–जीत का नतीजा आने के बाद हारा हुआ मुर्गा जीते हुए मुर्गे के मालिक का हो जाता है। परन्तु उस हारे हुए मुर्गे को प्राप्त करने के लिए भी आयोजक समिति से कुछ शुल्क देकर खरीदना पड़ता है। यह राशि सभी बाजारों में अलग–अलग हो सकती है जैसे कुछ स्थानों में हारे हुए मुर्गा को अपने साथ ले जाने के लिए 150 से 300 रू तक देना पड़ता है। किसी–किसी स्थान पर यह निशुल्क भी होता है। मैदान में मुर्गे को लड़ाने एवं मुर्गे के पैर में काती(छुरा) बांधने के लिए कातकार को विजेता मुर्गे के मालिक द्वारा कुछ रकम भी देते हैं। यह राशि पहले से तय होता है जो 200 से 300 रूपये तक भी हो सकता है।

मुर्गा लड़ाई का वर्तमान दृष्टिकोण

बस्तर में मुर्गा लड़ाई ग्रामीण अंचल की षान है। मुर्गा लड़ाई का आयोजन हाट–बाजारों में होता है तो यह दृश्य किसी उत्सव से कम नहीं लगता। क्योंकि मुर्गा लड़ाई के दौरान मुर्गा के हौसला बढ़ाने के लिए जो एकत्रित भीड़ होती है वह बहुत जोश से परिपूर्ण होती है। दर्शक जिस मुर्गे में दांव लगाये होते है उसका हौसला मुर्गे को उसके रंग के आधार पर नाम देकर बढ़ातें हैं, जैसे– लाल रंग वाले मुर्गे को लाली और काले को काली कहकर पुकारते हैं। सैकड़ों–हजारों दर्शक का सम्पूर्ण ध्यान दोनो मुर्गा पर होता है जिनके मध्य लड़ाई हो रही है। मुर्गा लड़ाई के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोण और वर्तमान दृष्टिकोण में परिवर्तन प्रतीत होता है। वर्तमान में मनोरंजन के स्थान पर आर्थिक गतिविधियां देखने को मिलते है। मुर्गा लड़ाई में मुर्गा के मालिक और बाहर से देख रहें दर्शक पैसों के दांव लगाते हैं जो एक प्रकार सा जुंआ जैसा लगता है। मुर्गा लड़ाई की पूरी गतिविधियां पैसो के लेन–देन से गुजरते हुए प्रतीत होती है।

निष्कर्ष

बस्तर में मुर्गा लड़ाई मनोरंजन का एक प्रमुख ऐतिहासिक पारम्परिक खेल है। जहां एक ओर वर्तमान में मनोरंजन का विविध साधन आ गये हैं। वर्तमान में युवा सोशल मीडिया, क्रिकेट, इत्यादि खेलो को अपनी पहली पसंद मानते हैं, वहीं दूसरी ओर बस्तर के युवा आज भी मनोरंजन के लिए हाट–बाजार में मुर्गा लड़ाई का इंतजार करते हैं। आज भी बस्तर के गोंड जनजाति क्षेत्र ग्रामीण

अंचल में मुर्गा लड़ाई हाट–बाजारों की शान है। मुर्गा लड़ाई बुजुर्गों के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक धरोहर है जो पारम्परिक मनोरंजन का साधन है। परन्तु वर्तमान में युवाओं के लिए मुर्गा लड़ाई मनोरंजन कम और व्यावसायिक अधिक प्रतीत होती है। इसका कारण यह है कि मुर्गा लड़ाई में लगने वाला दांव है जो 10 रूपये से लेकर लाखों रूपये तक लगता है। युवा इसको मनोरंजन कम और जुंआ अधिक मानते है। दर्शक मुर्गा लड़ाई का आंनद लेने कम और दांव खेलने अधिक जाते है। पैसा हारने के बाद किसी से उधारी लेकर दांव लगाते हैं, उधारी का पैसा नहीं मिलने पर तुरन्त घर वापस लौट आते हैं। इससे प्रतीत होता है कि मुर्गा लड़ाई का वर्तमान स्वरूप पैसे कमाने का एक माध्यम बनकर रह गया है। बहुत से दर्शक कीमती समानों को गिरवी रख कर दांव लगाते हैं जैसे मोटर साइकिल, साइकिल इत्यादि। बहुत से ग्रामीण का घर, जमीन, बहुत से कीमती समान इस मुर्गा लड़ाई में दांव लगाने में ही बिक गये और बर्बाद हो गये। इससे यह प्रतीत होता है कि परम्परागत रूप से मुर्गा लड़ाई जो स्वास्थ्य मनोरंजन का साधन हुआ करती थी, वह आज व्यावसायिक मनोरंजन के रूप में बदल गयी है।

मुर्गा लड़ाई अन्य क्षेत्रों में प्रतिबंधित है क्योंकि इसे पक्षियों पर क्रूरता के अन्तर्गत रखा जाता है परन्तु बस्तर के गोंड जनजाति के लिए यह एक पारम्परिक खेल एवं मनोरंजन का साधन है जो बस्तर की संस्कृति का अहम हिस्सा है। मुर्गा लड़ाई का जो वास्तविक स्वरूप है और इस खेल के प्रति जो ऐतिहासिक विचारधारा है वह सिर्फ मनोरंजन के लिए था ना कि वर्तमान स्वरूप जिसके पीछे सोंच सिर्फ पैसा कमाना या जुंआ की दर्ष्टिकोण रखना है।

संदर्भ

1. परवेज, मेहरून्निसा, (2004) पासंग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज 147
2.. क्रांति टंण्डन, किशन (2022) छत्तीसगढ़ पर्यटन महिमा (काव्य संग्रह), Booksclinic Publishing, Bilaspur cg p.32
3. https://www.patrika.com/jagdalpur-news/the-cock-fight-held-in-the-haat-bazaars-of-bastar-is-a-lot-of-fun-7887723
4. https://divyajagran.in/asheel-murge-ke-palan-se-hongi-tagdi-kamai/
5. https://youtu.be/LpfshNiGz0M?si=58vVfprRBsPQG7Bj
6. क्षेत्रीय अवलोकन